बोलना पड़ता है। उतना तो मैं बोलूँगा, लेकिन मेरा मिशन देखने, सुनने और प्यार करने का ही है, यह बात मैंने कही थी। मैं कहना चाहता हूँ कि मुझे उस मक़सद में अच्छी कामयाबी हासिल हुई है।

सुनने की मंशा

मुझे जो सुनना था, वह सब लोगों ने सुनाया है, जितना सुनने की जरूरत थी, उससे ज्यादा सुनाया है, लेकिन हर हालत में जो कुछ सुनाया है, दिल खोलकर सुनाया है। जिन्होंने अपने विचार मेरे सामने रखे वे एक-दूसरे के मुख्तलिफ थे, एक-दूसरे से डरते हुए भी पाये गये और उन्हें एकान्त में बात करने की जरूरत महसूस हुई, इसलिए हमने एकान्त में भी बात की और मुझे यह कहने में खुशी होती है कि जिस-किसी जमात के साथ हमारी बात हुई, चाहे वह सियासी जमात थी, मजहबी जमात थी या समाजी जमात थी, चाहे चन्द व्यक्ति थे, उन सबने यह महसूस किया कि यह अपना ही आदमी है और इसके सामने दिल खोलकर बात रखने में कोई खतरा नहीं है, बल्कि इसकी तरफ से हमारे लिए हमदर्दी ही रहेगी और जवाब में साफ बातें ही कही जायँगी। ऐसा विश्वास रखकर लोगों ने हमारे सामने अपनी बातें रखीं और मेरी सुनने की जो मंशा थी, उसमें हम पूरे कामयाब हुए।

देखने की मंशा

मेरी देखने की जो मंशा थी, उसमें हम कुछ कामयाब हुए हैं, पूरे कामयाब नहीं हुए हैं। क्योंकि सैलाब की वजह से कुछ हिस्सा देखने का रह गया। सैलाब न आता तो हम और हिस्से भी देखते। जो मियाद, मुद्दत हमने बाँध रखी थी, उसमें हम और हिस्सों में भी जा सकते थे। हमारी कृष्णा बहन (कृष्णा मेहता, सदस्य, लोक सभा) का जन्मस्थान किश्तवाड़ में भी हम जाना चाहते थे, लेकिन नहीं जा सके। उसमें वक्त की कमी भी एक कारण था और सैलाब की वजह से हमें कुछ जगहों पर ज्यादा रुकना पड़ा था, इसलिए देखने में हम सौ फी-सदी कामयाब हुए, ऐसा नहीं कह सकते हैं। लेकिन चावल पका है या नहीं, यह देखने के लिए चावल का हर दाना देखने की जरूरत नहीं रहती है। थोड़ा-सा देखने पर मालूम हो जाता है। इसलिए मैंने जो देखा और काफी देखा, उससे काफी खयाल आ सकता है। अगरचे इस स्टेट का पूरा दर्शन करना हो तो चार महीने नाकाफी हैं। एक साल की जरूरत है। क्योंकि यहाँ मुख्तलिफ मौसम होते हैं। उन मौसमों में लोगों की क्या हालत होती है, यह उनके साथ रहे बगैर नहीं मालूम हो सकता है। इसलिए जाड़े में श्रीनगर में रहना जरूरी था। तब मुझे पता चलता कि लोगों की क्या हालत होती है। लेकिन इतना समय मेरे पास नहीं था, न मैंने इतना समय देना जरूरी ही समझा। यह पहला ही मौका था। अगर परमेश्वर ने चाहा और उसे जरूरत महसूस हुई तो वह मुझे यहाँपर दुबारा भी ला सकता है। लेकिन पैदल घूमनेवाला किसी जगह को छोड़ता है तो फिर से आने का खयाल नहीं कर सकता है, सब कुछ ईश्वर पर छोड़ता है। एक साल का अनुभव चार महीने में नहीं आ सकता था, फिर भी मैंने जितना देखा, वह हालत का अन्दाजा करने में काफी था।

प्यार करने की मंशा

मेरा तीसरा काम, मंशा थी—प्यार करना। इन चार महीनों में एक भी मौका मुझे याद नहीं है, जब कि प्यार के सिवाय और कोई खयाल मेरे मन में आया हो। मेरे मुँह से कोई शब्द निकला हो। वैसे शब्द तो काफी निकले हैं और सामने जो लोग आये, उन्हें मैंने डाँटा-फटकारा भी है, लेकिन उन्होंने उस डाँट में और फटकार में प्यार ही महसूस किया और मैंने उन्हें जितना डाँटा और फटकारा, उन्होंने उतना ही अपने में और मुझमें नजदीकी महसूस की। परमात्मा की कृपा थी कि प्यार करने का मेरा इरादा पूरा हुआ। जहाँ तक ये तीनों चीजें मिलकर हालात को पहचानने और समझने की बात थी, उसमें मैं जो समझा, वह थोड़ा-थोड़ा लोगों के सामने रखता गया। खानगी में और जाहिरा तौर पर भी मैं बोला हूँ। उसमें जो फर्क रहा, वह इतना ही रहा कि जो बात चंद लोग समझ सकते हैं, वह मैंने चन्द लोगों के सामने रखी और जो बात आम लोग समझ सकते हैं, वह मैंने आम लोगों के सामने रखी। इसके अलावा और कोई फर्क उन दोनों में नहीं रहा। इस तरह का फर्क करने का मादा मुझमें नहीं है। मैं जो बोलता हूँ, वह समझनेवाले की कूवत देखकर बोलता हूँ। मुझे यह कहने में बड़ी खुशी होती है कि जहाँ अक्सर किसीको जाने का मौका नहीं मिलता है, मुझे मौका मिला और इसमें किसी का कोई नुकसान होने का था ही नहीं। फौज के सामने भी बात करने का मौका मुझे मिला और मुझे यह कहने में बड़ी खुशी होती है कि मैंने पाया कि फौज में जो लोग आते हैं, वे सचमुच सेवा करने के खयाल से ही आते हैं। यह बात ठीक है कि उनका काफी समय ऐसे ही घूमने में और देखने में जाता है, लेकिन कुल मिलाकर मुझपर यह असर रहा कि उनमे सेवा करने का खयाल है और मेरे विचार उन्होंने प्यार से ग्रहण किये। यहाँपर मैं कई जमातों से मिला। मुसलमान, हिन्दू, सिख, बौद्ध वगैरह जमातें, हरिजन, रिफ्युजी, एक्स-सोल्जर्स वगैरह लोग और कई तबकों के लोग मेरे पास आये और मेरे पास जो था, मैंने उन्हें दिया। इतने में उन्होंने तसल्ली मानी। इससे हम कह सकते हैं कि हमने अपनी प्यार करने तथा प्यार पाने की तीसरी मंशा को भी बहुत कुछ पूरा होते देख लिया। सर्वोदय में प्यार पाना भी एक मुख्य काम है।

यहाँपर लोगों ने तीन-चार दफा मुझे याद दिलाया कि इसी प्रकार का मिशन लेकर भगवान शंकराचार्य कश्मीर आये थे। मैंने कबूल किया कि शंकराचार्य के मिशन का जो स्वरूप था, उससे मेरे मिशन का स्वरूप मिलता-जुलता है। उन्होंने अद्वैत का विचार कहा था। याने इन्सान-इन्सान में कोई फर्क नहीं है, बल्कि इन्सान परमात्मा के नूर से भी जुदा नहीं है, परमात्मा के नूर का ही एक जुज़ है। वह कुल है, यह जुज़ है। यही अद्वैत है।

[चालू]

अनुक्रम

१. लोकशक्ति ही लोकशाही का आधार.
विजयपुर १४ सितम्बर '५९ पृष्ठ ७०३
२. 'जय-हिन्द' से 'जय-जगत्' की ओर.
जम्मू-कश्मीर २० सितम्बर '५९ ,, ७०५

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in